CONCEPT AND CHARACTERISTICS OF LEARNING

अधिगम का अर्थ एवं परिभाषाएँ
(Meaning and Definations of Learning)

अधिगम या सीखना एक बहुत ही सामान्य और आम प्रचलित प्रक्रिया है। जन्म के तुरन्त बाद से ही व्यक्ति सीखना प्रारम्भ कर देता है और फिर जीवनपर्यन्त कुछ-न-कुछ सीखता ही रहता है। एक बच्चा जलती हुई दियासलाई की तीली या लैम्प की लौ को छूने से जल जाता है। उसके लिए यह पहला कटु अनुभव होता है। इसी बात को भी जलती हुई तीली, लैम्प की लौ और चूल्हे तक किसी भी जलती हुई वस्तु अर्थात आग से दूर रखना सिखा देता है।

इस प्रकार से प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष अनुभवों के माध्यम से एक व्यक्ति के व्यवहार में अधिक परिवर्तन होते रहते हैं। अनुभवों द्वारा व्यवहार में होने वाले इन परिवर्तनों को सामान्य रूप से सीखने की संज्ञा दे दी जाती है।

इसी संदर्भ में कुछ जानी-पहचानी परिभाषाएँ नीचे दी जा रही हैं।

1) गार्डनर मरफी (Gardner Murphy) → "सीखने या अधिगम शब्द में व्यवहार संबंधी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए व्यवहार में होने वाले सभी प्रकार के परिवर्तन सम्मिलित हैं।"
(The term learning covers many every modification in behaviour to meet environmental requirements :- 1968, p. 205)

2) गेट्स व अन्य (Gates & others) → "अनुभव के द्वारा व्यवहार में होने वाले परिवर्तन को सीखना या अधिगम कहते हैं।"
(Learning is the modification of behaviour through experiance)

3) वुडवर्थ (Woodworth) → "किसी भी ऐसी क्रिया को जो कि व्यक्ति के (अच्छे या बुरे किसी भी तरह के) विकास में सहायक होती है और उसके वर्तमान व्यवहार और अनुभवों को जो कुछ वे हो सकते थे, उससे भिन्न बनाती है, सीखने की संज्ञा दी जा सकती है।"

(Any activity can be called learning so far as it developes an individual (in any respect, good or bad) and makes his later behaviour and experiances the different from what they would otherwise have been.)

4. किंगस्ले एवं गैरी (Kingsley & Garry) → "अभ्यास अथवा प्रशिक्षण के फलस्वरूप नवीन तरीके से व्यवहार (अपने विस्तृत अर्थ में) करने अथवा व्यवहार में परिवर्तन लाने की प्रक्रिया को सीखना कहते हैं।

(Learning is a process by which behaviour (in the broader sense) is originated or changed through practice or learning)

5. क्रो व क्रो (Crow & Crow) → "सीखना आदतों, ज्ञान एवं अभिवृत्तियों का अर्जन है। इसमें कार्यों को करने के नवीन तरीके सम्मिलित हैं और इसकी शुरुआत व्यक्ति द्वारा किसी भी बाधा को दूर करने अथवा नवीन परिस्थितियों में अपने समायोजन को लेकर होती है। इसके माध्यम से व्यवहार में उत्तरोत्तर परिवर्तन होता रहता है। यह व्यक्ति को अपने अभिप्राय अथवा लक्ष्य को पाने में समर्थ बनाती है।"

(Learning is a acquisition of habits, knowledge & attitudes. It involves new ways of doing things, and it operates in an individual's attempts to overcome obstacles or to adjust to new situations. It represents progressive change in behaviour. It enables him to satisfy interests or to attain goals.

6. हिलगार्ड (Hilgard) → "सीखना का अभिप्राय वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा कोई क्रिया आरम्भ होती है अथवा परिस्थिति से सामना होने पर प्रक्रिया द्वारा परिवर्तित की जाती है बशर्ते कि क्रिया में होने वाले परिवर्तन की विशेषताओं को मूल प्रवृत्तियों, परिपक्वता या प्राणी की अस्थायी अवस्थाओं (जैसे थकावट अथवा औषधियों के प्रभाव इत्यादि) के आधार पर नहीं समझाया जा सके।"

(Learning is the process by which an activity originates or is changed through reacting to an encountered situation, provided that the characteristics of the change in activity cannot be explained on the basis of native responses, tendencies, maturation, or temporary states of the organism, eg. fatigue or drugs etc).

अधिगम या सीखने की प्रकृति एवं विशेषताएँ :-
(Nature & Characteristics of learning)

सीखने के द्वारा हमारे व्यवहार में जो परिवर्तन होता है, वह पूरी तरह से हमारे द्वारा अर्जित ही होता है। भाषा जो हम बोलते हैं, कौशल (Skills) जिन्हें हम प्रयोग में लाते हैं, रूचियाँ, आदतें तथा अभिवृत्तियाँ आदि जो हमारे व्यक्तित्व के अंग बने हुए होते हैं ये सबके सब अर्जित व्यवहारगत विशेषताएं हैं और हम सब सीखने की प्रक्रिया के परिणामस्वरूप ही हमारे व्यक्तित्व या जीवन चर्या के अंग बनते हैं।

प्रश्न उठता है कि किस प्रकार के अर्जित अधिगम व्यवहार की क्या विशेष प्रकृति होती है और उसमें किस प्रकार की विशेषताएँ देखने को मिलती है, इस प्रश्न का बहुत कुछ उत्तर सीखने संबंधी परिभाषाओं तथा उससे संबंधित सामग्री जिसकी चर्चा हम इसी अध्याय के पिछले पृष्ठों में कर चुके हैं, उसके आधार पर भली-भांति प्राप्त हो सकता है परन्तु फिर भी हमेंसे संक्षिप्त रूप में नीचे निम्न बिन्दुओं के अंतर्गत प्रस्तुत कर रहे हैं :-

1) सीखना व्यवहार में परिवर्तन है। (Learning is the change in behaviour)

2) अर्जित व्यवहार की प्रकृति अपेक्षाकृत स्थायी होती है। (Change in behaviour caused by learning is relatively permanent)

3) सीखना जीवन पर्यन्त चलने वाली एक सतत् प्रक्रिया है। (Learning is a continuous life long process)

4) सीखना एक सर्वभौमिक प्रक्रिया है। (Learning is a universal process)

5) सीखना उद्देश्यपूर्ण एवं लक्ष्य निर्देशित होता है। (Learning is purposive and goal directed).

6) सीखने का संबंध अनुभवों की नवीन व्यवस्था से होता है (Learning involves reconstruction of experience)

7) सीखना वातावरण एवं क्रियाशीलता की उपज है (Learning is the product of activity and environment)

8) सीखने हेतु एक परिस्थिति से दूसरी में स्थानांतरण होता (Learning is transferable from one situation to another)

9) सीखने के द्वारा शिक्षण अधिगम उद्देश्यों को प्राप्त किया जा सकता है (Learning helps in the attainment of teaching-learning objectives)

10) सीखने के द्वारा विद्यार्थी को उचित वृद्धि एवं विकास में सहायता पहुँचती है (Learning helps in the proper growth and development)

11) सीखना व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास में सहायक होता है (Learning helps in the balanced development of the personality)

12) सीखना समायोजन में सहायक है (Learning helps in proper adjustment)

13) सीखने के द्वारा जीवन लक्ष्यों की पूर्ति में सहायता मिलती है (Learning helps in the realization of goals of life)

14) अधिगम एवं विकास एक दूसरे के पर्याय नहीं है (Learning does not necessarily imply improvement)

15) अधिगम के द्वारा व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन लाये जा सकते है (Learning helps in bringing desirable changes in behaviour).

16) अधिगम एक ऐसी व्यापक प्रक्रिया है जिसका क्षेत्र बहुत विस्तृत है (Learning is a very comprehensive process possessing a quite wide scope).

अधिगम अर्थात् सीखने की प्रक्रिया
(The Process of Learning) →

सीखना एक विस्तृत और व्यापक मानसिक प्रक्रिया है। इसमें निरन्तरता (Continuity) का गुण पाया जाता है और विभिन्न सोपानों (steps) से गुजर कर यह क्रिया सम्पन्न होती है। स्मिथ (Smith) ने इन सोपानों की चार रूप में निम्न प्रकार से चर्चा की है—

"संक्षिप्त रूप में सीखने की प्रक्रिया में कोई अभिप्रेरक (Motive) या चालक (Drive), कोई आकर्षक लक्ष्य और इस लक्ष्य की प्राप्ति से संबंधित कोई बाधा या कठिनाई अवश्य रहती है। ये सभी बहुत ही आवश्यक हैं।"

(In short, the learning process involves a motive or drive, an attractive goal and a block to the attainment of the goal. All these are essential.)

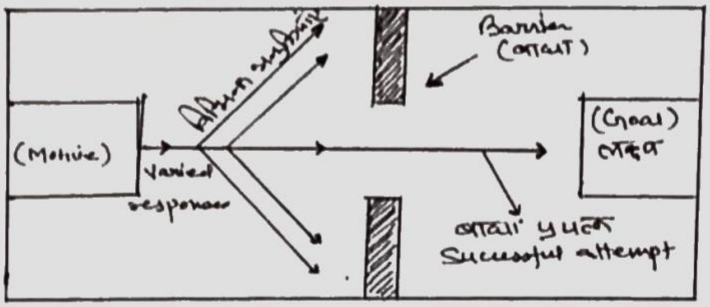

सीखने की प्रक्रिया

सीखने की प्रक्रिया से संबंधित उपर्युक्त तीन सोपानों के माध्यम से स्मिथ ने "हम क्यों सीखते हैं" इस समस्या पर विचार प्रस्तुत किये हैं और अभिप्रेरणा, आवश्यकताओं और लक्ष्य की, सीखने की प्रक्रिया में क्या भूमिका है, यह दिखाने का प्रयत्न किया है। लेकिन सीखने की प्रक्रिया का जो चित्र स्मिथ ने उक्त तीन सोपानों - अभिप्रेरक, लक्ष्य और लक्ष्य की प्राप्ति में बाधा - के माध्यम से खींचा वो अधूरा ही है। वास्तव में सोपानों से गुजर कर व्यक्ति सीखने के लिए उन्मुख होता है।

अतः यही सीखने के लिए प्रेरित करने वाली अवस्था ही मानी जा सकती है। वास्तविक अवस्था जिसमें कुछ सीखा जाता है, इस से आगे की अवस्था है। बच्चे को जो कुछ भी सिखाया जाए उसके पहले उसमें सीखने की तीव्र अभिलाषा उत्पन्न कर देना सीखने की प्रक्रिया का एक बहुत ही आवश्यक तथ्य है जिस पर पूरा-पूरा ध्यान देना चाहिए। और माता-पिता तथा अध्यापक को सीखने के लिए अभिप्रेरित करने के पश्चात जितने भी सोपान आते हैं, वे सभी वास्तविक रूप से सीखने वाले के द्वारा जो कुछ भी सीखा जाता है उससे संबंधित होते हैं। इनमें से एक महत्वपूर्ण सोपान सीखने की परिस्थितियां (Leaning Situations) को लेकर है। सीखने की परिस्थितियाँ सीखने के लिए अवसर प्रदान करती हैं।

सीखने संबंधी एक विशेष वातावरण में जबकि विद्यार्थी कुछ सीखने के लिए तत्पर होकर प्रयत्न करना आरम्भ कर देता है तो उस समय जो कुछ भी वह सीखता है सतत् अन्तःक्रिया (continous interaction) का परिणाम कहा जा सकता है। इस अन्तःक्रिया पर प्रकाश डालते हुए उदय पारीक (Udai Pareek) ने लिखा है— "अन्तःक्रिया किसी एक परिस्थिति में अनुक्रिया (response) उत्पन्न करने और उसके द्वारा आवश्यकताओं की संतुष्टि अथवा असन्तुष्टि के रूप में प्रेरणा प्राप्त करने की प्रक्रिया है। सीखना इस प्रकार की अन्तःक्रिया का परिणाम ही है।"

सीखने की प्रक्रिया में व्यक्ति के व्यवहार में परिवर्तन एवं संशोधन आता है जिसे वह आजन्म करता रहता है। यह कभी भी न समाप्त होने वाली प्रक्रिया है जो होती है। यह कभी भी न समाप्त होने वाली प्रक्रिया है जो चलती रहती है। एक परिस्थिति से सीखकर उसे दूसरी परिस्थिति में उपयोग लाया जा सकता है। सीखने की में जो कुछ कमियां रह जाती हैं उनकी पूर्ति आगे होती रहती है और इस तरह सीखने की प्रक्रिया अनवरत रूप से आगे बढ़ती रहती है।